मनुष्य बनो

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा,   प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाच सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनु बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साध रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्था दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे.

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक व होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—१० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहाँ डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २८ | मार्गशीर्ष सं० २०३४ वि० दिसम्बर, १९७७ | संख्या ३

८८---हित प्रीति का अंग

हरि सों तू मत हेत कर, कर हरिजन सों हेत ।
माल मुल्क हरि देत है, हरि जन हरि ही देत ॥ १ ॥
जैसी प्रीत कुटुम्ब सों, हरिजन सों जो होय ।
दास कबीरा यों कहै, काज न बिगड़ै कोय ॥ २ ॥
गुनवन्ता सोहनवन्त सों, प्रीति करै सब कोय ।
उत्तम प्रीत सो जानिये, इनसे न्यारी होय ॥ ३ ॥
हम तुम्हरो सुमिरन करें, तुम मोहि चितवत नाँह ।
सुमिरन मन की प्रीति है, सो मन तुमही माँह ॥ ४ ॥
दिल माहीं जो दिल रहै, तो दिल दूर न जाय ।
जो दिल दिल से बाहिरा, सो दिल कहाँ समाय ॥ ५ ॥
कहा भया तन बीछुड़े, दूर मिले जो वास ।
नैनों का अन्तर रहा, प्रान तुम्हारे पास ॥ ६ ॥
जल में बसै कुमोदनी, चन्दा बसै अकास ।
जो जाके मन में बसै, सो ताही के पास ॥ ७ ॥

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर

(गताङ्क से आगे)

अब क्या है ? चादर भी समाप्त। साँप मर गया मगर अभी तक दुम हिल रही है। यह है विदेह गति।

गुरु में देश है गुप्त परगट सब गुरु सब के आधारा।

बाबा फकीर या और गुरु किसी का आधार नहीं। गुरु की बात को समझो और उस पर अमल करो। अगर स्कूल में बच्चा मास्टर की खुशामद और सेवा करता रहेगा या उसको रुपये या कपड़े ही देता रहेगा और पढ़ेगा नही तो वह शिक्षा को प्राप्त नहीं कर सकता ऐसे ही अगर तुम लोग गुरु को रुपया और कपड़े देकर और उसकी मुट्ठी चापी करके या उसका मन्दिर या डेरा बनाकर यह समझो कि तुम सतलोक पहुंच जाओगे तो यह गलत हैं। उसकी बात पर अमल करने से तुमको लाभ पहुंचेगा। संसार वालों ने गुरु-मत को समझा नहीं। तुम लोगों को क्या कहूँ मैं स्वयं नहीं समझ सकता था। अब तुम लोगों के अनुभवों के कारण मुझे समझ आई। पिछले सन्तों ने सैन बैन से काम लिया और खोल कर बात नहीं बताई लेकिन मैंने सच्चाई का डन्डा हाथ में ले लिया और सचाई बताता हूं। तुम्हारी इच्छा हो मेरे पास आओ न इच्छा हो न आओ मन्दिर मेरा नहीं। मौज होगी तो चलेगा न होगी तो न सही। मैं हूँ समय का सन्त सतगुरु। सच्चा ज्ञान दिए जारहा हूँ कि ऐ मानव जाति। तुमको इन धर्मों, पंथों और गुरुओं ने सचाई न बताकर अज्ञान में रखा और तुमको लूटा। मूर्ख बनाया और हमारी सम्पत्ति लूटी। कोई सचाई नहीं बताता॥ जगह धोका है। घर वाले

अपने स्वार्थ के लिए अपनी ओर खींचते हैं और पब्लिक अपनी ओर खींचती है।

गुरु के देश की लीला अद्भुत गुरु संगत निरवारा।

गुरु का देश कौनसा है ? गुरु का देश एक तो प्रकाश और शब्द है और एक अपनी जात है जहाँ न मैं है और न तू है। जब अन्तिम मंजिल आजाती है तो मुँह में से न मैं निकलती है और न तू निकलती है। वह स्वयं जात हो जाता है। इस अन्तिम मंजल का नकशा हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने इस प्रकार खेंचा है—

मैंना मैंना रे मैंनामैंना तन पिंजरे में रह कर वोली बोले रे मैंना।

जब तक 'मैं' है तब तक 'तू' है। मोर तोड़ का झगड़ा 'मैं' जब जब गया गया तब 'तू' भी अब किसका है रगड़ा सतगुरु दीनीरे सैना।

मैं सैन बैन नहीं करता। मैं डन्डे मारता हूँ। संकेत को कोई नहीं समझता। इसलिये मैंने बात को खोल दिया।

जो 'तू' कहता है वह अन्धा है, मैं कहता दीबाना।
'मैं' 'मैं' 'तू' 'तू' को जो छोड़े, वही है चतुर सियाना॥
यह है सच्ची बैना।
जब 'मैं' है तब गुरु नहीं हैं, गुरु जब हैं 'मैं' नाहीं।
प्रेम की गली तंग है भाई, दोनों कैसे समाहीं॥
दोनों रहते हैं ना।

मोर तोर की माया रसरी, पुरानी फाँस फँसाने।
तोड़ के रसरी होगए न्यारे, फिर नहीं भरमाने।
होगये सच्चे मैंना।

बाहर में मेर तेर क्या है ? मेरा गुरु मेरा धर्म, तेरा पना और मेरा धन आदि २।

बकरी मैं कह गला कट वाए मैं मैं कर मिमियाये।
मैंना मैंना बचन सुनावे वेसन शक्कर खावे। कँसी मीठी मैंना'

मैंना मैंना मैंना वाले बोल की रटन लगावे ।
मैं को त्याग शान्त न जावे सुख आनन्द धुन गावे ।
पावे नित ही चैंना ॥

मुझे आप लोगों से यह मिला कि मैं चेतन का बुलबुला हूं । मैं न मैं बनता हूं और न 'तू' बनता हूँ । इसलिये शान्ति से जीवन व्यतीत करता हूँ ।

'मैं 'तू' भरम विकार है मन का, मन माया का साथी ॥
जो 'मैं' कहेगा दुख में मरेगा, कुचले अहं का हाथी ॥
मैं हूं दोनों है ना ॥

सुरत की पंछी मैंना बन कर, मैंना मैंना कहती ।
सुन्न वृक्ष की डाल पैं बैठी, दुख सुख अब नहीं सहती ॥
दिन है जहाँ रैना ॥

मैंना मैंना तूना तूना यह सतगुरु की बानी ।
बानी सुन सुन जो चितलावे बने सहज निरवानी ॥
माया फिर कभी व्यापे ना ॥

यह अवस्था अलख को लखने के बाद आती है । जो कुछ मेरे साथ जीवन में बीती या मुझे अनुभव हुआ वह हो सकता है कि गलत हो । लेकिन यह मेरी खोज है मैं जीवन में सचाई से चला । इस काम में मेरा निजी स्वार्थ कोई नहीं । अगर मेरा निजी स्वार्थ होता तो मैं भी हेरा फेरी करता और जितनी इच्छा होती धन इकट्ठा कर लेता । तुम जहाँ भी जाओ वे यही कहते हैं कि हम ही सब कुछ हैं और अपनी ओर खींचते हैं । लेकिन मैं यह कहता हूँ कि ऐ मानव ! तू पूर्ण है और अपने अन्तर चल । तू क्यों गुलाम होके दूसरों के पीछे फिरता है । गुरु की संगत और गुरु की सेवा गुलामी नहीं है । गुरु असलियत और सचाई बताकर आदमी को आजाद कर देता है और बाकी उसका उपकार रह जाता है और उस उप-

कार के बदले हम गुरु की सेवा करते हैं जैसे कि हम माँ के उपकार के बदले माँ की सेवा करते हैं।

अलख को लखले अगम की गमले परख गुरु की बानी।
राधास्वामी पद जब दर से छूटे आनी जानी ॥

राधास्वामी क्या है ? मैंने जो समझा है वह है विदेह गति अर्थात शरीर को रखते हुए शारीरिक मानसिक और आत्मिक बोध भानों में खेलते हुए और प्रकाश और शब्द में खेलते हुए इनमें न फँसना ही राधास्वामी मत है और यहीं सनातन धर्म कहता है। राधास्वामीमत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है। आदमी जिस अवस्था में रहता है वह उसको (Enjoy) करता है मगर उसमें फँसता नहीं यत्र यत्र मनोगच्छति तत्र तत्र समाधि नामः यह मेरी समझ में आया है। अपने अनुभव के आधार पर और हुज़ूर दाता दयालजी महाराज और दूसरे सन्तों की वाणी के आधार पर मैंने जो समझा है तो ऐ वर्तमान सन्तो ! और महात्माओ ! अगर मैं गलत हूँ तो आप मेरा खण्डन करो और अगर अपने निजी मान और प्रतिष्ठा के लिये मेरा खण्डन करोगे तो अपने कर्म के फल से नहीं बच सकोगे। मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं। तुम भी अपने अनुभव के आधार पर कहो। आज कल गुरु लोग क्या करते हैं कि एक आदमी के अन्तर अगर किसी गुरु का रूप प्रकट होगया और कोई बात कहदी और फिर जब वह आदमी गुरु महाराज के सत्संग में आके उनका फरमा बनाता है उसके सामने लाउड स्पीकर रख देते हैं और कहते हैं कि सुनो। यह आदमी क्या कह रहा है। लोग सुनते हैं और धड़ाधड़ रुपया इकट्ठा होता है।

गुरु में देश है गुप्त परगट सब गुरु सब के आधारा।
गुरु के देश की लीला अद्भुत गुरु संगत निस्तारा ॥

यह गुरु जो सबका आधार है वह है परमतत्व और वह सबके अन्तर रहता है। हम सब उसी में से निकले हैं और उसी की किरन

हम सबमें है लेकिन यह समझ बाहर के पूर्णगुरु की संगत से आती है।

सुरत शब्द की सुगम कमाई सहज ही काम बनाले।
इसी जन्म में धुर पद वासा, सार ज्ञान मत पाले ॥

कपांताप साहिब ! आप लोग आये हैं। मैं आपको न धोखा देता हूं और न ही आपसे कोई सेवा चाहता हूँ। आप अधिकारी हैं। मैंने जीवन में जो समझा वह आपको बता दिया। हम लोग रोचक और भयानक बातों में फँस जाते हैं। सन्तों ने लोगों को इस और आकर्षित करने के लिए रोचक और भयानक बातें कहीं।

गुरु की संगत पाँच दिना की पांच देश की खानी।
पांच ही दिन में काम बनेगा, सहज सुगम सुखदानी ॥
राधास्वामी नर शरीर में, धरा संत अवतारा।
सालिगराम गुरु की कृपा मुझे मिला सतसारा ॥

अब अगर मैं यह कहूँ कि हुजूर दाता दयाल जी महाराज की दया से और आप सत्संगियों की दया से मुझे सारतत्व मिला तो यह गलत नहीं है। हुजूर दाता दयालजी महाराज से मुझे उत्साह मिला आनन्द मिला और खुशी मिली। वह मुझे सार तत्व समझाने का बहुत यत्न किया करते थे मगर मेरी समझ में बात आती नहीं थी इसलिये उन्होंने मुझे यह काम दिया था। अब आप लोगों के अनुभवों के कारण मुझे सारतत्व की समझ आई कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और यह सब आदमी के मन और विश्वास का खेल हैं। इस ज्ञान से मैं मत को छोड़ कर ऊपर जाने के योग्य हुआ। ये तो परमार्थ की बातें हैं लेकिन आप लोग संसारी हैं। आपको संसार चाहिये। इसलिये अब संसार की बातें सुनो। अपने अनुभव के आधार पर कहता हुँ कि ध्यान किया करो। मगर एक का करो जो अपना ध्यान बदलता रहता है उसको कुछ नहीं मिलता। ध्यान के बन जाने से तुम्हारी विचार शक्ति (Will powel)

बढ़ जायेगी और तुम्हारे ही विचार और इच्छाओं के अनुसार तुम्हारी—मनोकामना पूरी होती रहेगी लेकिन याद रखो कि अगर तुम्हारी इच्छा बुरी है तो ध्यान शक्ति की बदौलत पूरी वह भी हो जायेगी और उससे तुम्हारी हानि भी हो जायेगी। इसलिए अपने विचारों को ठीक रखो। कई ऐसे भी कर्म होते हैं जिनको कोई टाल नहीं सकता। कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। हां ! अगर आदमी को ज्ञान है तो वह ज्ञान दृष्टि से कष्ट को अधिक भान नहीं करता। इस बारे में मैं अपना उदाहरण देता हूं। मेरा एक लड़का मर गया और दो लड़कियाँ मर गईं। उनके मरने पर बजाय शोक के मेरा खून बढ़ जाता था। क्यों ? मेरा इमानदारी का जीवन था और मैं गरीब था। हुजूर दाता दयालजी महाराज के दरबार में गया और प्रार्थना की कि महाराज मेरे पास पैसा नहीं मैं बच्चों के पालनपोषण शिक्षा और विवाह का कैसे प्रबन्ध करूँगा फरमाया कि चिन्ता मत करो दाता तुम्हारी सहायता करेगा। तो जब मेरे बच्चे मरे शब्द किया। मैंने अपने आपको Adjust किया। मेरा यह विश्वास बैठ चुका है कि what happens, happens for Good आप भी यह विश्वास करो कि जो कुछ हो रहा है ठीक हो रहा है मेरे पास दुखी लोग आते हैं। जिसका विश्वास होता है उसका काम हो जाता है लेकिन मैं कुछ नहीं करता। अब तुम लोग आये हो तुम्हारी मनोकामनायें पूर्ण हों। मैंने सचाई वर्णन करदी तुम्हारा दिल चाहे तो आओ न चाहे तो न आओ हुजूर दातादयाल जी महाराज ने मुझे शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी। इसलिये मैं गुरुमत से उतीर्ण होने के लिए यह काम कर रहा हूँ।

———

जी महाराज ने कहा था फकीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना। जब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीरचन्द ! तू बता तू क्या शिक्षा बदलना चाहता है ? क्या शिक्षा बदलूँ ? मैं बदल रहा हूं जो बाहर जाकर बदल के आया हूं ऐ इन्सान ! तेरी सहायता करने वाला तेरा अपना ही आत्मा, तेरा अपना ही विश्वास और तेरी अपनी ही श्रद्धा है मगर तू भूल में है। कोई हजरत मुहम्मद, कोई भगवान राम या कृष्ण, कोई देवी, कोई गुरु बाहर से नहीं आता। यह सब तेरे अपने ही विश्वास, श्रद्धा और संस्कार का खेल है जो सुनकर पढ़ कर दिमाग पर पड़ते हैं।

यह जगन्नाथ बैठा हुआ है इसने कल मुझे चार सौ रुपये भी दिये। यह कहता है परसों रात को डेढ़ बजे मैंने इसको जगाया। अब मैं तो गया नहीं, न मैंने जगाया, मुझे तो पता नहीं, सम्भव है इन दूसरे महात्माओं को पता होता होगा। पर मेरे सामने कइयों ने माना कि वह नतीं जाते। दाता दयालजी महाराज ने भी आखिरी सतसंग में साफ कह दिया कि मैं कहीं नहीं जाता मगर पहिले नहीं कहा। मैंने जो कुछ किया आरम्भ से ही सचाई से किया। यही मेरी शिक्षा सन्तों की ऊँची शिक्षा है, इसी बात को पर्दे में रखा गया। यही कारण है कि बड़े बड़े महात्माओं ने इस संसार में दुख उठाये। बाबा सावनसिंह जी को भी आखिरी समय में बहुत कष्ट हुआ। परम हंस राम, कृष्ण और ईसा मसीह की क्या दशा हुई। राधास्वामी दयाल पिछले दो साल बीमार रहे। गुरु अर्जुनदेव और गुरू तेग बहादुर का क्या हाल हुआ ? मैं पूछता हूँ क्यों ? यह महात्मा उस मालिक को याद करें और फिर इन्हें कष्ट हो। क्यों ? मुझे संशय होगया है कि इन महात्माओं ने संसार के लोगों को सचाई नहीं बताई सम्भव है उनके दुःखों का यही कारण हो। मेरे साथ क्या होगा ? मुझे स्वयं पता नहीं। मेरी जान जाती है मैं घबराता हूँ। चार दिन का जीवन है बताओ किस बात के लिए हेरा फेरी करूँ। मैं सदा

प्रवचन

हुजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

(दिनाँक २०—११-।७७)

राधा स्वामी,

मेरी आत्मा बहुत सत्य प्रिय है। मैं नहीं जानता जो सचाई मैंने प्राप्त की है ये गलत है या ठीक है। मैं इस बार दौरे पर गया ओर अनेक जगहों पर मैंने सत्संग दिए एक महीने के बाद वापिस आया आज मैं अपने सत्संगों का साराँश आपको बताता हूं।

लोग कहते हैं कि मेरा रूप प्रकट होकर उनकी सहायता करता है किन्तु मैं कहीं नहीं जाता। सरसों हेड़ी में एक व्यक्ति आया उसको अर्धाङ्ग की बीमारी थी। अब तो उसको बहुत आराम होगया था मगर अर्धाग का आँज भी उसे कुछ प्रभाव था। मगर चलता फिरता था। कोई विशेष कष्ट नहीं था। वो बूढ़ा आदमी था उसकी स्त्री नहीं थी, उसकी लड़की उसके साथ आई, बो लड़की कहती थी बाबा जी ! जिस दिन अर्धाङ्ग हुआ मैंने आपको याद किया, आप वहाँ प्रगट हुए। मेरे रूप ने उसको कहा तेरा बाप अच्छा हो जायगा। उसने बाप से कहा कि बाबाजी आये हैं ऐसा कहते हैं। बाप ने कहा मुझे तो नजर नहीं आते। लड़की ने कहा सामने देखो और उसने भी मुझे देखा। वो कहता है कि बीमारी की अवस्था में बीस बाईस दिन आप मेरे साथ रहे। यह मेरा जीवन चार दिनों का मर जाना है।

मैंने अपने जीवन में, जब, इस पंथ में आया था तो प्रण किया था कि सच्चा होकर चलूंगा जो कुछ मेरी समझ में आएगा वह मैं संसार को बता जाऊँगा। क्योंकि दाता दयालजी महाराज पर तो मेरा विश्वास टूटा नहीं मगर ये बाणियाँ मुझे भेद नहीं देती थीं। और उनको पढ़ कर मैं दुखी हुआ करता था। हुजूर दाता दयालजी

आपको बताया करता हूं कि मेरे शरीर को कष्ट पड़े अगर मैं झूँठ बोलूँ मुझे कुछ पता नहीं होता मगर लोग कहते हैं कि मेरा रूप जाता है। कोई कहता है हवाई जहाज लेके आये, कोई कहता है घोड़ा लेके आये, कोई कहता है पालकी ले के आये और मरते समय उनको ले गये मगर मुझे कुछ पता नहीं होता। मैं वर्तमान गुरुइज्म पर हैरान हूँ। मैं निर्भय होके कहना चाहता हूं कि यह वर्तमान गुरू या तो मेरा खण्डन करें या शपथ पूर्वक कहें कि हम जाते हैं। अगर नहीं जाते तो गरीब जनता को मूर्ख बना कर क्यों लूटा जारहा है ?

मेरे जिम्मे दाता दयालजी महाराज ने शिक्षा को बदल जाने का कर्तव्य लगाया था। उनकी आज्ञानुसार मैं शिक्षा को बदले जारहा हूँ। हर जगह यही कह कर आया हूँ कि ऐ इन्सान। अपने कर्म को ठीक कर, अपनी नीयत को ठीक कर। जब यह बड़े बड़े महात्मा जिन्होंने इतना भजन किया, यह भी अपने कर्मों की वजह से दुःख से नहीं बच सके तो तुम दुनियादार कैसे बच सकते हो ? अपने निज स्वार्थ के लिये तुम अपने भाइयों से दुश्मनी करते हो, अपने माँ बाप से विरोध करते हो, मित्रों से हेरा फेरी करते हो, जरा बताओ तो सही बच कर कहाँ जाओगे ? हम लोग क्या करते हैं ? चाहते हैं भाई मर जाये इसकी जायदाद हम लेलें। मुकद्दमे बाजियाँ करते हैं। स्त्रियाँ क्या करती हैं और पुरुष क्या करते हैं ? क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य है, मैं यह शिक्षा बदल के आया हूँ और सतसंगों में यही कह कर आया हूँ।

दशहरे के सतसंग पर भारत सरकार के स्वस्थ विभाग के मन्त्री श्री राजनारायणजी भी आये। एक प्रभुदयाल नामी सज्जन ने उठ कर मेरी बड़ी प्रशंसा की और कहा कि इन्होंने तीन हस्पताल बनाये हैं, इन की मदद होनी चाहिये। मैं ने खड़े होकर कहा कि मैं भिकारी नहीं हूँ, मैं सकार की खुशामद करने और भीक माँगने नहीं आया। जनता का काम है यह सरकार का कर्तव्य है कि अगर वह इसे

धर्म समझती है और नियमानुकूल है तो ऐसी संस्थाओं की सहायता करें वरना न करें। क्योंकि मेरे जिम्मे दाता दयाल जी महाराज ने ड्यूटी लगाई थी—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आये, परम दयाल सनेही।

इसी ख्याल को लेकर मैंने श्री राज नरायन को दो चार बातें कहीं जिसका साराँश आपको बताता हूँ। मैंने कहा हम हिन्दू हैं शास्त्रों की आज्ञानुसार सरकार के विधान को ईश्वर का रूप समझते हैं अर्थात राज भक्त हैं। अंग्रेजों के समय भी राज भक्त रहे, कांग्रस की सरकार बनी तब भी हम राजभक्त रहे, जनता पार्टी का राज्य है हम आपके विधान के राज भक्त है, यह हड़तालें और घेराओ करने वाले देश की सम्पत्ति को नाश करने वाले देश द्रोही हैं। मगर हम शान्ति प्रिय लोगों को यह पार्टियों वाले हड़तालें और घिराव करने के लिए विवश करते है। हम शान्ति प्रिय लोगों की रक्षा करना सरकार का विशेष कर्त्तव्य है। जब तक हड़तालें और घिराव देश में होते रहेंगे देश में शान्ति नहीं आसकती देश में ना शान्ति आएगी ना ही देश समृद्धशाली बनेगा।

फिर मैंने कहा एक व्यक्ति कोई मशीन बनाता है और वो बता देता है कि इतने समय के बाद ये मशीन उपयोगी नहीं रहेगी। यदि कोई फिर उसको उस ढंग से नहीं चलाता उस विधि से उसका प्रयोग नहीं करता और ठीक ढंग से नहीं चलाता या उस समय से अधिक चलाता है तो क्या परिणाम होगा? मशीन टूट जाएगी और हानी होगी उदाहरण मैंने कहा कि गौतम बुद्ध ने अपना गौतम बुद्ध धर्म चलाया उनका एक शिष्य आनन्द भिक्षु स्त्रियों को भिक्षू बनाना चाहता था किन्तु गौतम बुद्ध इसके विरुद्ध था। जब वह विवश होगया जिस तरह मैं यहाँ हूँ यहाँ का इन्तजाम करना पड़ता है मैं कार्य कर्ताओं की गलतियों की ओर ध्यान ना देने में विवश।

अपने बस की कोई बात नहीं। नेहरूजी भी विवश थे। जब भाखड़ा डैम बन रहा था तो लोगों ने कहा कि अधिकारी और कर्मचारी रिश्वत खाते हैं। तो उन्होंने उनके विरुद्ध कुछ नहीं किया। जब लोक सभा में प्रश्न उठाया गया तो उन्होंने कहा मैं क्या करूँ! क्या सब को नौकरी से निकाल दूँ। तो काम कौन चलाएगा। ऐसे ही मैंने वहाँ कहा कि गौतम बुद्ध ने विवश होकर उसको आज्ञा दे दी किन्तु साथ ही कह दिया कि जिस धर्म को मैंने चलाया है शायद ये भारतवर्ष में एक लाख वर्ष चलता मगर अब क्योंकि स्त्रीयों को भिक्षु बनने के लिए सम्मिलित कर लिया है इसलिये ये धर्म ५०० वर्ष से अधिक नहीं चलेगा। ऐसे ही महात्मा गान्धी ने काँग्रेस बनाई। मैं उनको आध्यात्मिक संसार का नेता नहीं कहता वह अध्यात्मिक व्यक्ति नहीं थे चाहे उनमें आध्यात्मिक का थोड़ा सा भाग था। हाँ वो राजनीति के बापू थे। जब स्वराज्य मिल गया तो उन्होंने कहा कि काँग्रेस को भंग कर दो। मगर कांग्रस वालों ने उनकी आज्ञा का पालन नहीं किया। उसका फल देश को भुगतना पड़ रहा है।

मैंने वहाँ ये भी कहा कि मैंने एक पत्र भी जयप्रकाश जी को लिखा था कि वर्तमान प्रजातन्त्र में चुनाव प्रणाली एक मीठा विष System of elcction is a Swset position to the nature मगर वह पत्र जयप्रकाश नारायण के आदमियों ने लेने से इन्कार कर दिया और वापिस आगया। एक बात मैंने उनको और कही कि आप परिवार नियोजन के मन्त्री हैं यदि परिबार नियोजन न करोगे तो आप सफल नहीं हो सकते और साथ ही बड़े दर्द दिल से गाकर यह भी उनसे कहा इतना सन्देश मोरार जा के मुरारजी को कह देना।

यह जो मैं कहता हूँ यह मुरार जी को कह देना कि बूढे ने यह बात कही थी। उन्होंने पूछा आप क्या करते हैं। सन्त यह करते हैं कि वह इस संसार के पैदा करने वाले को अथवा ईश्वर

और परमेश्वर को जालिम निर्दयी और काल कहते हैं। हम इसको मानते तो हैं मगर यह हमारा इष्ट नहीं है। हमारा इष्ट गुरू ज्ञान, सत्तगुरु और सच्चा ज्ञान है जो हम किसी पूर्ण पुरुष से प्राप्त करते हैं। क्यों ? उसने दुनिया बनाई, तुम देखो एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है. पौधा लगाओ कीड़े खाजाते हैं, इन वृक्षों में भी जान हैं, दूसरा कीड़ा तीसरे कीड़े को खाता है, तीसरा चौथे को, बड़ी मछली छोटी मछलो को खाती है। उसने हमकों अपने ही रूप पर बनाया तो हम क्या करतें हैं ? बच्चे पैदा करते हैं, क्या आपने या हम लोगों ने बच्चों को बच्चों के ख्याल से पैदा किया है ? एक बाप अपने स्वाद की खातिर बच्चे पैदा कर देता है वह बच्चे नौजवान होकर आपस में लड़ते हैं, सिर काटते हैं, दुनिया में एक बदतमीजी का नमूना बनाते हैं मुकद्मे बाजी होती है। इसका जिम्मेदार कौन है ? जिसने ये बच्चे पैदा किये । क्योंकि उसने बच्चों को बच्चों के ख्याल से पैदा नहीं किया। तुम आप सोचो हम जितनी सन्तान पैदा करते हैं क्या सन्तान के ख्याल से करते है ? शास्त्र भी यही कहते हैं कि बच्चों के गुनाहों के जिम्मेदार माँ बाप, चेलों के गुनाहों के जिम्मेदार गुरू और प्रजा के गुनाहों का जिम्मेदार राजा क्योंकि उन्होंने ठीक तरीके से न तो सन्तान पैदा की, न सच्ची शिक्षा चेलों को दी और न प्रजा को सीधे रास्ते लगाया। यह आप दोष करते थे रिश्वत खाते थे, पार्टीबाजी करते थे, जनता कैसे न करेगी।

मैंने उनको बोला कि तुम सुनो या न सुनो मैं सचाई बयान किये जाता हूँ। इसीलिये मैंने इन्सान बनो की आवाज उठाई है। मैंने अपने आश्रम का नाम रूहानी आश्रम नहीं रखा। दुनिया को रूहानियत की तो आवश्यकता ही नहीं है, हमें तो दुनिया के दुःख हैं, रूहानियत बिल्कुल अलग चोज हैं और जब तक पहिले इन्सानियत नहीं आती इन्सान रूहानियत का अधिकारो ही नहीं हैं। मैं यह काम करता हं। मैं क्या करूँ गुरू का हकम मानना मेरे लिये आवश्यक

है। जो व्यक्ति माता-पिता की आज्ञा गुरू की आज्ञा और समय के कानून को नहीं मानता वह पतित है। मुझे उन्होंने कहा था कि शिक्षा को बदला जाय। मैं सोचता हूँ कि फकीरचन्द ! तू क्या शिक्षा बदलेगा। पहली शिक्षा तो मैं ये बदल रहा हूं ऐ मानव जाति ! कोई बाहर का राम, बाहर का कृष्ण, देवी या गुरू तुम्हारे अन्तर नहीं जाता। इतना अवश्य होता है कि अभ्यासी को टेली पैथी के नियमानुकूल किसी समय दूसरे के हालात का ज्ञान हो जाता है ये सम्भव है मगर वो नहीं जाता। मगर इस समय सब जगह देखो इस अज्ञान का क्या परिणाम हो रहा है। अब बनारस में क्या हुआ ? हिन्दू मुसलमानों का झगड़ा हुआ, कर्फ्यू लगा छः सात दिन कर्फ्यू लगा। क्यों लगा ? क्योंकि हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को सचाई का पता नहीं। इस भ्रम को मिटाने के लिए इस कलपुग में सन्तों का अवतार होता है मगर खेद है जो कुछ राधास्वामी दयाल, कबीर साहब या अन्य सन्त कह गये उसको उनके अनुयायियों ने माना नहीं अपनी ही मान प्रतिष्टा के लिए धोखा दिया जारहा है और लूटा जा रहा है कि नाम ले जाओ सतगुरु तुमको अन्त समय सतलोक ले जायेंगे। अगर ये महात्मा मेरे सामने ना मानते तो मैं मान लेता कि मैं गलत हूँ। बाबा चरणसिंहजी ने, बाबा सावन-सिंह जी ने, भाई नन्दूसिंहजी ने और आनन्दरावजी ने माना कि हम किसी के अन्तर नहीं जाते और अब एक और हैं जो अपने आपको सहिनशाए आलम बोलते है। वो सन्त कृपालसिंहजी की जगह विदेश में काम कर रहे हैं। पीरेमुर्गा साहेब के मित्र हैं गाढ़ी में सोनीपत मुझे मिले कहते थे कि अमेरिका में दो चार बार जा आया हूं अब भी जा रहा हूं। मैंने कहा मैं तो गुरु नहीं हूँ, सच बताओ तुम्हारा रुप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और तुम जाते हो ? उन्होंने भी माना वो नहीं जाते मगर जनता को सीधा रास्ता कोई नहीं बताता। तभी तो मैं कहता हूं कि मैं अनामी धाम से

केवल सचाई को प्रकट करने के लिए आया हूँ कि हकीकत क्या है ।

शुभ भावना अवश्य प्रभाव रखती है मगर वहाँ करती है जहाँ होने वाली बात होती है । मेरे साथ एक घटना हुई मेरी लड़की प्रेमप्यारी थी जो विवाहित थी । फीरोजपुर में पं० बलीराम हकीम के यहाँ शादी थी लड़की और मेरा दामाद दोनों वहाँ आये हुए थे । लड़की मेरे पास आई कहने लगी पिताजी मेरी शादी हुए पांच-सात वर्ष होगये कोई बच्चा नहीं हुआ, सास, जिठानी और अन्य मुझे तंग करते हैं मैं क्या करूँ । मैंने उसको बोला बेटी ? फकीर की लड़की है बच्चे उत्पन्न करने में पीउ सहेगी जीवन का क्या भरोसा है किसलिये सन्तान की इच्छा करती है तू दूसरों की ओर ध्यान मत दे जो मरजी कहते रहें । दस मिनट के पश्चात मेरा दामाद जिसका नाम देशराज है आया ओर कहने लगा कि मेरे कोई बच्चा नहीं किधर जाऊँ उसको मैंने कहा किस लिए घबराते हो बहुत बच्चे होंगे । अब मैं सोचता हूं कि मुझे ये ख्याल नहीं आया कि तुमने लड़की को क्या कहा और दामाद को क्या कह रहा है और ना ही मेरे मन में ये ख्याल आया कि लड़की मर जायगी । डेढ़ वर्ष के बाद लड़की मर गई दामाद ने दूसरी शादी करली अब उसके बहुत बच्चे हैं । मैं जो कुछ संसार को कहना चाहता हूँ वो ये है कि सन्त वहाँ बोलता वही कहता है जो बात होने वाली होती है । कोई सन्त किसी के कर्म को नहीं बदल सकता तुम भूल में हो । हम महात्माओं और गुरुओं और सन्तों ने तुमको मूर्ख बनाया यदि कोई सन्त की बात को समझ कर अमल करता है तो हो सकता है कि उसके विश्वास से उसका कर्म किसी सीमा तक बदल जाए । मैं जो कुछ कह रहा हूँ तुमको बिलकुल ठीक कह रहा हूं । आपका जी चाहे मेरे सत्संग में आओ आपका जी चाहे मत

करो मत दो, आप मेरी किताब पढ़ो या मत पढ़ो या पढ़ो, मैं तो अपनी जिन्दगी को साफ करके ले जाना चाहता हूँ।

अब मैं श्री ताराचन्द के यहां गया तो दस वर्ष पूर्व मेरे पास दुःखी होकर दिल्ली में आया था। उसने सोचा था यदि बाबा सन्त होगा तो मुझे अपनी झूठ दे देगा। वो आकर बैठ गया मुझे पता नहीं था कि ताराचन्द कौन है कोई भगवे कपड़े भी नहीं थे। मैं चाय पीने लगा दो घूँट पीकर मैंने प्याली उसको देदी मैंने कहा तू काम कर तेरा नाम रोशन हो जायगा जा, अब मैं गया हूँ आप हैरान होंगे कि उसका आश्रम मानवता मन्दिर से दुगना है। बड़े सुन्दर भवन हैं एक हजार आदमी को इकट्ठे बिठाकर खाना खिलाने के लिए स्टील की एक हजार थाली रखी हुई हैं। अब वो यह समझता है कि बाबे ने आशीर्वाद दी हुई है और उनकी आशीर्वाद काम करती है। अब उसने और एक आश्रम बनाया है जो पानीपत और सोनीपत के दर्मियान है वो भी बड़ा अच्छा आश्रम बना हुआ है। मैं उसकी फोटो लेकर आया हूं। अब मैं सोचता हूँ कि मैंने जो उसको ये कहा कि तेरा नाम रोशन होगा ये उसके भाग्य में था। तो मेरा कहने का भाव ये है कि अगर मेरे कहने से उस ताराचन्द का मेरे आश्रम से भी बड़ा आश्रम बन सकता है तो मैं हरएक को क्यों नहीं कह देता ? वो मेरे पास आया उसकी Radiation मेरे दिमाग पर पड़ी जो होना था मेरे मुँह से निकल गया इस लिए मैं अपने तजुरबे के आधार पर कहता हूँ कि कोई सन्त किसी को कुछ नहीं देता। जो होना होता है वो सन्त के मुँह से निकलता है ये है बात जो मैंने समझी है। हो सकता है मैं गलत हूँ मैं कान को हाथ लगाता हूं मैं किसी बात का दावा नहीं करता। सन्त अगर कुछ दे सकता है तो वो ये है कि भवसागर से पार होने का मार्ग बताता है और जिन्दगी अच्छी होने का तरीका बतलाता है। बस सन्त ये कर सकता है। क्योंकि दाता दयाल ने कहा था शिक्षा बदल जाना। उन्होंने ये नहीं

कहा कि तू इन्सान बनो की आवाज उठा ये करो या वो करो मैंने स्वयंमेव जो अनुभव किया वो कहता हूँ। मेरे पास लोग आते हैं, कोई बात होती है मैं कह देता हूँ। कुछ समय हुआ एक आदमी ने हैदराबाद से दस हजार रुपये ड्राफ्ट मन्दिर में भेजा, उसने शर्त क्या लगाई ? कि मैं बीमार हूं आप मुझे स्वस्थ कर दें। ड्राक्ट आया मैंने मन्दिर में जमा करने के बजाय उसके नाम अलग जमा करवाया और उसे लिखा कि मैं तुझको राजी नहीं कर सकता, जीवन मरन मेरे हाथ में नहीं है, तेरे कर्म के वश में है। अगर तू बिना शर्त के दान देना चाहता है तो दान देदे, मैं मन्दिर में खर्च कर लूँगा। शर्त के साथ मैं दान नहीं लूँगा। मेरी आत्मा ने नहीं माना, मैंने नहीं लिया। डेढ़ महीने तक जवाब नहीं आया। अब उसकी पत्नी की चिट्ठी आई है कि मेरा पति मर गया है, मैं विधवा हो गई हूँ वह रुपया मुझे वापिस करदें। मैंने वह दस हजार रुपया उसे वापिस कर दिया। अब मैं सोचता हूं कि मेरे पास कई आते हैं, कोई बात मैं कह देता हूँ, इसको मैंने क्यों नहीं कहा कि तू राजी हो जायेगा। कइयों को मैं कह देता हूं कि तुम राजी हो जाओगे, पत्रों में मैं रोज लिखता हूं उसको क्यों नहीं कहा ? जो होना था हो गया। मैं हूँ वीतराग पुरुष, मेरा अन्तर और बाहिर बिल्कुल साफ और सच्चा है। कोई उसमें कपट, कोई कुछ नहीं। आगे तो था अब बिल्कुल नहीं रहा, तो जो होने वाली बात होती है उसका नक्शा मेरे दिमाग पर पड़ जाता है और मेरे मुँह से होने वाली बात स्वाभाविक निकलती है, जान बूझकर नहीं कहता, न मैं इरादे से ही कुछ कहता हूं।

साधु बोले सहज स्वभाव, साध का बोला वृथा न जाये।

तो हम लोगों को क्योंकि गलत शिक्षा मिली हुई है गलत ढंग से गलत प्रोपोगण्डा किया जाता है। यह सतसंग मैं वहां देकर आया हूं एक और नई चीज मैं आपको बताना चाहता हूं जिसने मुझे शेर बना दिया और अगर मेरी जिन्दगी रही जिस लाइन पर मैं काम

करता हूँ निर्भय होकर करूँगा। दुनिया की किसी भी शक्ति का मुकाबला करने के लिए तैयार हूँ। दाता लिखते हैं।

देहे धरा तो देहे तू, अन्न द्रव्य का दान।
अन्य द्रव्य के दान से तेरा होगा कल्याण॥

मैं वहाँ क्या कहके आया हूँ। सबसे बड़ा दान अन्न दान है। तुम नौ जवान हो तुम्हारी स्त्री भी नौ जवान है तुमने एक बच्चा उत्पन्न कर दिया। यदि दान देने के विचार से दूसरा बच्चा तुम और पैदा ना करो अर्थात तुम और सन्तान पैदा ना करो इस भाव से कि तुमने अन्न दान देना है। अब तुम सोचो कि कितने बच्चे तुम्हारे और होंगे कितनी परिवार संख्या बढ़ती जाएगी वो दुनियाँ में कितना अन्न खायेंगे जो इस बिचार को रखकर अधिक बच्चे उत्पन्न नहीं करेगा वो तो ऋषियों के यज्ञों से हजार दर्जे उत्तम है। इसको सोचो मैंने क्या कहा। हमने अन्न का दान देना है! अब इतना अन्न तो दुनियाँ में है नहीं केवल यही उपाय है कि सन्तान कम पैदा करो। दो चार बच्चे पैदा करते हैं वो आगे बच्चे पैदा करते हैं उनके आगे बच्चे होंगे वो कितना अन्न खायेंगे! ये कहकर आया हूँ बाहर के लोगों और देहातियों को और आपको भी यही कहता हूँ। हमने अन्न द्रव्य का दान देना है कितना अन्न दान दोगे? एक बच्चा पैदा करके अपने वश में रखो तो तुम्हारा जीवन बन गया यदि तुमने ये भाव रखा कि जो अन्न सन्तान उत्पन्न ना करने से बचेगा जनता को मिलेगा। कितना भारी पुण्य है दान की कोई हद नहीं रही तुम संतों से भी बड़े हो गए। सोचो! वो कहते हैं तुम्हारा कल्याण होगा।

देहे धरा तो देह तू, औरों को सम्मान।
औरन के सम्मान से, तुझे मिलेगा मान॥

मैं विनोद गया वहां एक आदमी आया जवान था। मुझे कहता है आपका नाम क्या है! आप कहां से आये हैं! क्यों आये हैं!

पहले मैंने समझा शायद C. I. D. का हो पीछे पता लगा वो पः
कार है। मैंने कहा मैं होशियारपुर से आया हूँ और अपने सतगुरु
देव सन्त ताराचन्द जी को मत्था टेकने आया हूँ। उसने पूछा क्या
आपके गुरु सन्त ताराचन्द हैं ? मेरे हाथ में अन्न है मालिक मुझे ये
न दे अगर मैं झूँठ बोलू ! मैं तुम लोगों को जिन्होंने मुझे गुरु माना
है मैंने सच्चे दिल से आपको सतगुरु माना है इसमें कोई झूँठ नहीं
उसने पूछा सन्त ताराचन्द आपके गुरु कैसे बने ? मैंने कहा जिस
तरह स्वामी दयानन्द के गुरू तो श्री बिरजानंद जी वो मगर उनको
असली ज्ञान शिवजी की मूर्ति से मिला था। इसी प्रकार मैंने संत
ताराचंद या अपने अन्य चेलों से सत्य ज्ञान प्राप्त किया है। इसलिए
मैं संत ताराचन्द जी को गुरु रूप में नमस्कार करने आया हूँ।

देहे धरा तो देह तू, सतगुरु का सतनाम।
सतगुरु के सतनाम से, पावेगा विश्राम ॥

ये देखो क्या कहते हैं ! कहते हैं यदि देहे धरा है तो लोगों को
सतगुरु का नाम दें। सतगुरु का नाम लोगों को देने से तुम्हें क्या
मिलेगा ? तुमको विश्राम मिलेगा। मैंने विश्राम पाया। मैं संत
ताराचंद के पास क्यों गया ? मैं दयालदास को क्यों प्रतिष्ठा करता
हूँ। मैं कृषक के आगे क्यों सिर नवाता था ? और भी आदमी हैं इस
वास्ते कि मुझको इन लोगों से विश्राम मिला है। विश्राम मिला है।
विश्राम कहते हैं शान्ति को। कैसे मिला ? उनसे जब मैंने सुना कि
मेरा रूह उनकी सहायता करता है, प्रकट होता है और मैं नहीं होता
तो मेरे अन्तर में जो कुछ भी मन की फुर्तायें, संकल्प, वासनायें हैं
उनको मैंने क्या समझा ? कि वह कल्पित है। इससे मुझे क्या मिला
शान्ति और अपने आप में ठहरने का ज्ञान मिल गया।

दिनोद में लगभग एक हजार रुपया लोगों ने मुझे दिया वह स
मैंने ताराचन्द को दे दिया। उस पर मेरा कोई अधिकार नहीं था
उसने आती बार मुझे सोलह सौ रुपये अपने पास दिये। ताराचन्

ने मुझे कहा बाबा आपने मेरे चने कटवाये, मैं तो था नहीं। ऐसे ही और लोग भी कहते हैं लेकिन मैं तो होता नहीं। उनको मैंने नाम दान दिया, उन्होंने मुझको गुरू माना लाभ मुझे पहुंचा। क्या लाभ पहुंचा ? कि भई मैं तो जाता नहीं यह जो कुछ भी है माया है। यह तो अपने मन का ख्याल है। मेरे मन के अन्तर जो कुछ पैदा होता है मैं समझा हूँ यह माया है, है नहीं। जब मैं ऐसा समझता हूँ तो शान्ति स्वाभाविक ही मिलनी चाहिये। अशान्ति का मूल कारण तो मन ही है। मुझे मन के रूप का पता लग गया। कबीर साहिब कहते हैं।

शिष्य निवे गुरु को यह जाने सब कोय।
गुरु निवे शिष्य को कोई विरला ही होय ।।

सन्त मत का यही एक राज था जिसको आजतक छुपा के रखा गया। स्वामी जी महाराज ने इसी राज को संकेतों में कहा। लोगों ने स्वामी जी को कहा कि राय सालिगराम साहिब आपके बड़े प्रेमी और सच्चे शिष्य हैं। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि क्या पता सालिग राम मेरा गुरू है या मैं सालिगराम का गुरू हूँ। यही बात दाता-दयाल जी महाराज मुझे कहा करते थे। जब मैं लाहौर जाता तो सतसंगों में कहा करते थे। यह फकीर मुझे तारने के लिए अथवा भवसागर से निकालने के लिए आया है। इस रहस्य को छुपाने का परिणाम यह हुआ कि मानव जाति बट गई। गद्दियाँ बन गईं। हम गृहस्थियों को मूर्ख बनाया गया, हमारी सम्पत्तियें लूटी गईं और हमसे नाक रगड़वाये गये। तुम देखते नहीं हो कैसे लोग गुरु महाराज के आगे नाक रगड़ते हैं। किस तरह लम्बे पड़कर मत्था टेकते हैं। मुझे भी कई दण्डवत करते हैं। क्यों करते हैं ? क्योंकि उनको असलियत का पता नहीं और किसी महात्मा ने इस तरह बताया नहीं। मैं कहा करता हूँ कि मैं अनामी धाम से यह कहने के लिए आया हूँ कि ऐ इन्सान तू अपने आप को जान कि तू कौन है। जैसा गुरू

इन्सान है वैसे ही तुम इन्सान हो, कुछ भी अन्तर नहीं है, तुमको पता नहीं है तुम मन के चक्कर में आये हुये हो। दुनिया की आशाओं के पीछे नाक रगड़ते फिरते हो। अरे गुरुओं के अपने बच्चे नालायक हुये, जब वह अपनी सन्तान को ठीक न कर सके, अपनी औरतों के साथ उनकी न बनी तो तुम्हारा भला कहाँ से कर सकेंगे। ऐ इन्सान ! तेरा भला तेरे कर्म ने करना है। गुरु ने तुमको सच्चा रहस्य और सच्चा भेद देना है। क्या भेद देना है ? कि यह संसार कर्म क्षेत्र है।

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ेगा।

जो काम तुमने किये हुए हैं अथवा मैंने किये हुए हैं अवश्य भोगने पड़ेंगे, बच नहीं सकते। पुरुषोत्तम दास ! तू मेरा मित्र है मैं कई बार सोचता हूँ कि सम्भव है जो कुछ मैंने समझा है वो गलत हो। मुझे कोई अफसोस नहीं मेरी नियत साफ है। मैं इस चार दिन के जीवन में तुम लोगों की आँखों में मिट्टी डालकर अपना उल्लू सीधा नहीं करना चाहता। ये ठीक है कि मुझे मन्दिर के लिए रुपये की आवश्यकता है मगर मैं हेराफेरी करके आप लोगों को मूर्ख और उल्लू बनाकर आप से धन नहीं लेना चाहता। जिसका जी चाहे खुशी से मानवता मन्दिर की सहायता करे, जिसका जी ना चाहे बेशक ना करे। आग लगे गुरुवाई को, मैं तो डर गया, मेरी जान कांपती है। क्यों ? हमको अपने कर्म का फल भोगना पड़ेगा। तुम किसी का धन खाते हो किसी के साथ चार सौ बीस करते हो, अपने स्वार्थ के लिए दूसरों से हेराफेरी करते हो जाओगे कहाँ ! जब सन्त नहीं बच सके तो तुमको कौन बचायेगा क्योंकि दातादयाल जी महाराज ने कहा था कि शिक्षा बदले जाना। दाता ! पता नहीं मैंने ठीक किया या गलत किया दूसरे महात्माओं को मैं अधिकार देता हूँ कि यदि मैं गलत हूं तो मेरा खण्डन करदें मुझे कोई अफसोस नहीं। मेरे साथ तो ये बीती।

जब मैं सच्चे दिल से दिनोद गया तो सोचा क्या मैं ताराचन्द के चने कटवाने के लिए गया था ? बिलकुल नहीं। मेरे तो बाप को भी पता नहीं। अब वो मानता है कि अगर बाबाजी नहीं मिलते तो मेरा अहंकार ना जाता जिसमें आकर मैं फूला नहीं समाता था कि मेरा रूप लोगों की सहायता करता है। ये रूप तुम्हारे अपने ही विश्वास का है इस भ्रम में लाकर हमको मजहबों ने लूट लिया। ऐ गृहस्थियो ! मैं तुम्हारे लिये तुम को सच्ची बात बताने आया हूँ अपने दिमाग को ठीक करो और अपने कर्म को ठीक करो।

समझता है जगन्नाथ ! आँखें खोल ! मैं परसों तेरे अन्दर नहीं गया जैसा कि कहता है कि रात के डेढ़ बजे मैंने तुमको जगाया। मेरे बाप को भी पता नहीं कि तू कौन है। तूने चारसौ रुपये दिये, मुझे पैसे की जरूरत है, धन्यवाद करता हूँ मगर बात सच्ची कहता हूँ। जो मेरे साथ बीती यदि वो इन गुरुओं के साथ भी बीती तो महाराज ! चाहे जो कोई भी था इन गुरुओं ने हमारे साथ नेकी नहीं की। अपने निज स्वार्थ अपनी मान प्रतिष्ठा और अपने मन्दिर, डेरे और धाम के लिये हमारे साथ बुराई की मैं इसी वास्ते इस संसार में प्रकट हुआ हूं कि दुनियाँ को सचाई बता जाऊँ।

देह धरा तो देह तू, सतगुरु का सतनाम।
सतगुरु के सतराम से, पावेगा विश्राम॥

यह दाता का शब्द है। कैसे बिश्राम पायेगा ? दाता को पता होगा, मैं नहीं जानता। मैंने विश्राम कैसे पाया ? जब कृषकजी आये और उन्होंने बताया कि मैं उनके अन्तर अभ्यास में प्रकट होकर उनके काम करता था, उन्होंने अपनी डायरी दिखाई तो मैंने अपना सिर उनके आगे नवा दिया, पाँच पैसे और नारियल देकर मत्था टेक दिया और कहा जाओ लोगों को नाम दान दिया करो तुझे आप

पता लग जायेगा। दस महीने मन्दिर में रहे अस्सी रुपये महीना उनके खर्च के लिए और साठ रुपये महीना उनके नौकर को दिये। क्या दयालदास को मैंने नाम दान दिया? उसका अपना ही विश्वास और श्रद्धा है अब जो उसकी इच्छा करता फिरे। कमालपुर वाली माई को मैंने क्या दिया, कुछ नहीं दिया। उसने मेरे शब्दों को नाम समझ लिया और मुझे गुरू मान लिया। लाभ किसको हुआ? मुझे अपने आपको लाभ पहुँचा। मुझे विश्राम मिल गया; शान्ति मिल गई। जो मैं पहले मन से गुरू को ढूढने दौड़ा करता था, सब समाप्त होंगया यह मन का चक्कर था अब मैं शान्ति से अभ्यास करता हूँ। मन को छोड़ जाता हूँ और प्रकाश से ही अभ्यास आरम्भ करता हूँ। यही राधास्वामी मत कहता है कि मन से आगे सतलोक में जाओ तब आवागवन के चक्कर से निकलोगे।

देह धरा तो देह तू, प्रेम प्रीति परतीत।
प्रेम प्रीत परतीत से, होगा तेरा हीत॥

अब तुम देखो, कहते हैं प्रेम प्रतीत से तुझे लाभ होगा लोग मुझ पर विश्वास करते हैं। मैं तो कुछ करता नहीं उनके विश्वास का उनको फल मिलता है।

देह धरा तो देह तू, प्रेम प्रीत परतीत।

दूसरों के साथ प्रेम करना उन पर विश्वास करना ही प्रेम प्रतीत करना है। मुझे इससे लाभ हुआ मेरी आँखें खुल गई। हर दिन पत्र आते हैं किसी को किसी चीज की आवश्यकता होती है तो लिखते हैं बाबा! तेरा ध्यान किया हमारा यह काम होगया वह काम होगया। मैं कुछ नहीं करता उनको अपने ही प्रेम प्रतीत का फल मिलता है। इसलिये जहाँ भी तुम जाते हो विश्वास करो, उन्हें पूरा मानो तुम्हारे सब काम पूर्ण हो जायेंगे। मैं वहाँ पर यह कह कर आया हूँ। जो बाबा फकीरचन्द का सत्संग नहीं करता

केवल उसको ध्यान ही करता है वह मुर्दा गुरु की पूजा करता है। राधास्वामी मत में केवल जीवित गुरु की महिमा है और पूजा है। तुमने पूजा को यह समझ रखा है कि धन देदो, मत्था टेक दो, तुम्हारे सब काम हो जायेंगे, यह तो संसार का व्यवहार है। जो कुछ मैं इस समय कह रहा हूँ अगर तुम इसे पूरे ध्यान से सुनोगे इस पर विचार करोगे तो जो कुछ आप करोगे अर्थात मेरी ओर ध्यान देकर मेरी बात को सुनोगे और उस पर अमल करोगे उसका नाम गुरु भक्ति है। जो मेरा ध्यान करते हैं वह गुरु भक्ति नहीं है वह तो मन की भक्ति है काल मत हैं अर्थात तुम्हारे ही मन का खेल है यही मेरी समझ में आया है।

इसमें शक नहीं कि मैं ऊँचा चला गया लेकिन मेरे बस की बात नहीं। बूढ़े आदमी बच्चों की बातें नहीं किया करता। मैं जिस अवस्था में रहता हूं उसीका वर्णन करूँगा, मेरी विवशता है। आप लोग आजाते हैं मैं जो कुछ कहता हूँ अपनी नीयत को साफ रख कर कहता हूँ। हो सकता है मैंने जो कुछ समझा हो यह गलत हो। जो लोग यह समझते हैं कि मैं गलत हूं तो मेरे पास न आया करें। मैंने तो सच्ची बात कहनी है झूठी बात मुझसे नहीं कही जाती। मैंने इन गुरुओं के हाल देखे हैं। मैं डर गया हूं, पता नहीं मैं कैसे मरूँगा। अगर मैं भी गल सड़ कर मरा तो अगर होश रह गई तो जिस तरह सिकन्दर कह गया था कि मरने के बाद मेरे हाथ खाली रखना मैं भी कह जाऊँगा कि इस संसार में कोई आदमी सफाई वर्णन न करे, नहीं अपना जीवन सचाई और नीयत को साफ रख कर व्यतीत करें जो इच्छा हो करे।

मैं इन महात्माओं के हालात को देख कर चकित होता हूं। मुझे भ्रम होगया है कि इन महात्माओं ने हमारे साथ अच्छा वर्ताव नहीं किया, हमें सचाई नहीं बताई क्यों ? क्योंकि तुम अधिकारी

नहीं हो, दूसरे बात समझ में आगई तो फिर नहीं आओगे क्योंकि धन इकट्ठा नहीं होगा गद्दियां नहीं बनेंगी। मगर जो आदमी गुरु से ज्ञान, सार तत्व को प्राप्त करके उसका उपकार नहीं मानता वह कृतघ्न है जैसे कबीर साहब ने कहा है—

कामी तरे क्रोधी तरे, पापी तरे अनन्त।
आन उपासक कृतघ्न तरे न नाम रटन्त ॥

अर्थात जो कृतघ्न हो उसकी मुक्ति नहीं होती। मैं कुछ नहीं करता जो होने वाली बात होती है मेरे मुँह से निकल जाती है और वह पूरी हो जाती है। मैं ही नहीं कोई भी कुछ नहीं कर सकता। अगर ये सन्त कर सकते होते तो अपने बच्चों अपनी स्त्रियों को ठीक कर लेते अगर दाता दयाल में इतनी शक्ति होती तो धाम को क्यों उजड़ने देते, यद्यपि मैंने १९१९ में कह दिया था कि ऐ दाता ! तेरी धाम उजड़ जायेगी। ऐसा क्यों कहा था ? इसलिए कि मुझे यह ज्ञान आज का नहीं हुआ है १९२१ का हुआ है अब तो पक्का हो गया है—

आप लोग आजाते हैं मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूँ, मैं काँपता हूं, मेरी समझ में जो आया है, अपने अनुभव के अनुसार कह दिया। दाता दयाल जी महाराज और हुजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज की आज्ञा का पालन करता हूँ। बाबा सावनसिंहजी महाराज ने मुझे कहा था कि निर्भय होकर काम कर जाना मैं तेरा संरक्षक रहूँगा। इस बार दौरे पर बहुत कुछ कहके आया हूँ, उसका साराँश आपको बता दिया। तुम लोग सँसारी हो तुमको हमको जो कुछ मिलता है हमारे अपने ही कर्म का फल है। इस बात को भूल जाओ कि तुम राधास्वामी हो, तुमने किसी गुरू से नाम लिया हुआ है या तुम राम, कृष्ण को मानने वाले हो।

कर्म जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना।

अर्जुन जिसने लड़ाई के मैदान में क्या कुछ नहीं किया जब श्री कृष्णजी महाराज का सारा कुल लड़के मर गया तो कुछ स्त्रियाँ और गोपियाँ वाकी रह गईं, जब अर्जुन उनको लेकर आरहा था तो भीलों ने सब छींन लीं। वही अर्जुन वही बाण मगर कुछ न कर सका। मेरी बात को सुनो इतिहास को पढ़ो जो कुछ हमारे तुम्हारे तुम्हारे साथ होता है हमारे ही कर्मों का फल है। अगर आपकों कोई विपत्ति आती है तो हाय हाय करने रोने धोने से क्या लाभ। इसलिये मैं कहता हूँ कि ऐ मानव ! अपने कर्म को ठीक कर अपनी नीयत को साफ रख। कल एक माई मेरे पास आई, कहने लगी कि तीन हजार कर्ज होगया है। इतनी जमीन होते हुये इतना कर्ज चढ़ गया इसके जिम्मेदार कौन है। उसकी सौत लड़के की ओर संकेत करते हुए कहा तुम जिम्मेदार हो। अगर ऐसा करना है तो मेरे पास मत आया करो, मैं तेरी आंखों में मिट्टी नहीं डालना चाहता। तुम मेरे पास आते हो मेरे सिर पर भी कोई जिम्मेदारी है। अपनी नीयत को साफ रखो अपने धर्म को पालो अपने कर्तव्य का पालन करो जैसा कि कबीर साहिब ने कहा है—

दया राख धर्म को पाले, जग में रहे उदासी।
अपना सा जीव सब को जाने वाही मिलैं अविनाशी ।।

जव तक तुम ऐसा नहीं करते भूल जाओ कि तुमने किसी गुरु से नाम लिया हुआ है आपका आवागवन समाप्त नहीं होगा। कई बार अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीरचन्द ! हो सकता है कि तेरे पास कुछ हो मगर मुझे कोई पता नहीं। वह कैसे ? जैसे एक सुन्दर स्त्री बाजार में जारही है उसे नौजवान देख कर बिचलित हो जाते हैं अगर उस स्त्री को पता लग जाये तो शायद वह उन्हें जूते मारे अगर मुझे या तुम्हें प्रकृति ने कोई चीज दी है तो मैं उसका क्या

अहंकार करूँ उसकी इच्छा है आज लेलो या जब उसकी इच्छ हो ले लो। हाँ ! पातंजली के योग शास्त्र में यह लिखा है कि अगर तुमसे कुछ नहीं बनता तो किसी बीतराग तुरुष का ध्यान किया करो तुमको सब कुछ मिल जायगा और मैं कहता हूँ कि तुम बीत-राग पुरुष को कहाँ ढूँढने जाओगे जिस जगह पर तुम्हारा विश्बास है उसीको बीतराग पुरुष मान लो तुम्हारा काम बन जायेगा। अगर मेरा रूप सहायता करता है तो और गुरुओं का भी करता है सन्तों को छोड़ो अगर किसी १० नवम्बर के बदमाश को गुरु बनाओ और तुम्हें उस पर बिश्वास हो जाये तो उसका रूप भी तुम्हारे अन्तर प्रगट होकर तुम्हारी सहायता करेगा। सहायता तो तुम्हारे विश्वास और श्रद्धा ने करनी है गुरु ने नहीं करनी।

मैं संसार में आया, अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीरचन्द ! तू पथ भ्रष्ट तो नहीं होगया ? संसार को पथभ्रष्ट तो नहीं करता विचार करो कि अगर मैं पथ भ्रष्ट हो भी गया हूं तो मेरी नीयत साफ है मैं अपने स्वार्थ के लिये कुछ नहीं करता, अगर मैं गलत भी हूं तो मैं दोषी नहीं, बाबा सावनसिंह जी महाराज या महर्षि दाता-दयाल जी महाराज जी दोषी हैं। क्यों उन्होंने मुझे यह काम दिया, वे सन्त थे क्या उन्हें यह ज्ञान नहीं था फिर मैं सच्चा आदमी हूं सच्ची बात कहूँगा। तुम कहोगे कि तुमने भी दूसरों को ऐसा काम दिया है। मैंने तो लोगों को इसलिये काम दिया कि उनके भ्रम चले जायें जैसे कि कमालपुर वाली माई है' सारा जीवन तड़पती रही। मैंने उसको स्त्रियों का गुरु बना दिया अब इसका रूप स्त्रियों के अन्तर प्रकट होता है अब कहती है मैं तो नहीं जाती न ही मुझे पता होता है अगर इस तरह उसे समझ आजाये तो इसे अपने आप बिश्राम मिल जायेगा। इसी प्रकार दयालदास को गुरु बनाया है इसलिये नहीं बनाया कि संसार को लूटते फिरें बल्कि इसलिये कि उन्हें ज्ञान हो जाये।

आप लोग आते हैं मैं अपनी बहुत जिम्मेदारी महसूस करता ? हूं सदा अपनी आत्मा से पूछता रहता हूँ कि फकीरचन्द ! तू ने मकड़ी का जाल बना दिया क्या तू किसी के लिए कुछ कर सकता है ? जो कुछ मैं तुम्हें देना चाहता हूँ तुम उसे लेने के लिए तैयार नहीं । मैं वह चीज देना चाहता हूँ कि तुम संसार में फिर जन्म न लो, तुम्हारा आवागवन मिट जाये । मगर तुम्हें इस चीज की आवश्यकता नहीं । कोई कहता है मेरा पुत्र नालायक है कोई कहता है मेरी स्त्री से नहीं बनती, कोई कुछ कहता और कोई कुछ आदि आदि । यह शरीर नाशवान है कोई चार साल के लिए आया, कोई दस साल के लिए आया । संसार है क्या ? कभी किसी ने सोचा है कि मैंने एक दिन इस संसार को छोड़ जाना है ।

मैं बाहर दौरे पर गया हुआ था जो कुछ वहाँ पर कहके आया हूँ उसका यही नचोड़ है । मैं इस संसार से बचने का ढंग जो कि विज्ञान ने सिद्ध किया है बता के आया हूँ कि मरने वाले को तराजू पर रख दिया जब उसकी जान निकली तो कोई दस ग्राम कम हुआ, कोई पंदरह ग्राम और न कोई बीस ग्राम जो चीज अन्तर से निकली उसको मसाला लगाकर परदे पर देखा गया जब वह चीज निकली तो शरीर कम हुआ । इससे सिद्ध होता है कि जो चीज अन्तर से निकली उसका भार था । जो चीज भारी है चाहे वह कितनी भी भारी हो जमीन की कशिश उसे ऊपर नहीं जाने देगी । वह चीज भारी क्यों होती है ? क्योंकि मरते समय आदमी के मन में स्थूल चीज से प्यार होता है जैसे कि मकान, माँ-बाप, देश गुरु की देह गुरु का डेरा, धनुषधारी राम का देह, अयोध्या कृष्ण और गोकल आदि २ । जब वह चीज भारी होगी, तुमने लाख जप तप किये हुये हैं, लाख शब्द अभ्यास किये हुये है, गुरु बने हुये हैं अन्त समय तुम्हारा शरीर भारी होने के कारण ऊपर नहीं जायेगा दूसरा जन्म अवश्य मिलेगा ! मिलेगा !! मिलेगा !!! कोई संसार की शक्ति रोक

नहीं सकती यही बात बाबा सावन सिंह जी महाराज ने कही है कि जिनको हरिद्वार से प्रेम है वे मरकर हरिद्वार की मछलिये बनेंगे अब जिनको होशियारपुर, आगरा व्यास से प्रेम है वे मरकर वहीं पैदा होंगे। हजूर पवित्र विभूति गए सालिगराम साहिब जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है उन्होंने प्रेम बाणी में साफ लिखा है कि अन्त समय फिल्म चलती है जिस गुरु से नाम लिया हुआ है वह भी आ जाता है, उसका सूक्ष्म शरीर कुछ दिन ऊपर रहेगा, सतसंग मिलता रहेगा फिर जब कोई समय का संत सतगुरु, आयेगा वह दोवारा जन्म लेगा और बाकी की कमाई पूरी करेगा फिर धुर धाम जायेगा। जो यह समझते हैं कि नाम ले लो गुरु सतलोक ले जायेगा ऐसा विचार बिलकुल गलत है धुरधाम कैसे जाओगे ? विज्ञान का सिद्धान्त आपको बता दिया हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज और राय सालिगराम जी महाराज की बात बता दी अब सनातन धर्म की सुनो। सनातन धर्म में लिखा है कि पच्चीस साल ब्रह्मचर्य रखो फिर विवाह करो। जो हिन्दू पच्चीस साल ब्रह्मचर्य नहीं रखता वह हिंदू कहलाने का अधिकारी नहीं है फिर एक दो बच्चे हो जाये तो स्त्री साथ रहे मगर उसे स्त्री मत समझो फिर बानप्रस्थ में आ जाओ सन्यासी को किसी के घर दो या तीनदिन रहने की आज्ञा नहीं मगर अब सन्यासी बनने का समय गया। अब सन्यास धारण करने के लिए घर छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं। मन का सन्यास लो, मन को सम्भालो।

जो सिद्धान्त सनातन धर्म का हैं वही बाबा सावनसिंह जी महाराज का है और वही सिद्धाँत मोक्ष प्राप्ती के लिए विज्ञान है। अगर जन्म मरण से बचना चाहते हो तो मरते समय किसी भी स्थूल चीज से मोह न रखो तब तुम इस चक्कर (भवसागर) से निकल सकोगे अन्यथा नहीं। अगर तुम्हारे सामने प्रकाश आजाये तो प्रकाश में जाओगे, प्रकाश को जमीन नहीं खींच सकती मगर प्रकाश

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

मंडल से आगे नहीं जा सकते। यह बहुत गूढ़ रहस्य है तुमको क्या समझाऊँ यह सन्तमत की ऊँची शिक्षा है। इस संसार में रहते हुये अपने कर्तव्य का पालन करो जैसे कि कबीर साहिब फरमाते हैं—

न हरि रीझे जप तप कीने न काया के जोर।
न हरि रीझे धोती झाड़े ना पाँचों के मारे।
दया राख धर्म को पाले जग में रहे उदासी।
अपना सा जीव सबको जाने ताहि मिले अविनाशी ॥

क्या तुम सबको अपने जैसा जानते हो? स्त्रियां अपने बच्चों को मारती हैं, कुढ़ती हैं जब वे उनका कहा नहीं मानते उनको तो अपने दोष का पता नहीं होता इसलिए उनके मन से जो बात निकलेगी वह आपको खा जायेगी। मैं अपनी घटना बताता हूं मेरा एक छोटा भाई वजीरचंद था जब माँ खाना बनाने या दूसरे काम में लग जाती थी तो उसे मेरे पास दे देती थी। एक दिन जब माँ ने उसे मेरे पास खिलाने को दिया ज्योंही मैं आगे गया गुलेल से मेरा पाव लगा और मैं गिर पड़ा, नीचे बजीरचंद और ऊपर मैं। बजीरचंद रोने लगा। माँ उठी उसने एक न सुनी, पाँच सात थप्पड़ मुझे लगा दिये और फिर लड़का मेरी गोद में दे दिया और कहा जा इसे खिला। मैं लड़के को लेकर बाहर आया, वह जगह आज भी मेरी आँखों के सामने है जहाँ खड़े होकर मैंने प्रार्थना की कि ऐ भगवन ! इसके पीछे हर रोज मार पड़ती है या यह मर जाये या मैं मर जाऊँ। मेरा भाई छः महीने में मर गया। तुम स्त्रियाँ अपने बच्चों को मारती हो अगर तुम्हें कोई मारे तो तुम्हें क्रोध आता है या नहीं जब तक तुम्हारा व्यवहार ठीक नहीं जीने का राज जब तक तुम्हें इस भेद का पता नहीं तुम लाख शब्द अभ्यासी बन जाओ तुम्हारी सुरत ऊपर न चढ़ेगी।

पहले किसी संसारिक चीज से प्यार करो। चाहे माँ की सेवा

करो चाहे बाप की चाहे देश की सेवा करो। जब तुम उनकी सेवा करोगे तुममें कुरबानी का मादा पैदा हो जायेगा तो जब तुम अभ्यास में बैठेंगे तो क्योंकि तुम्हें हर चीज को भूलने की आदत है तुम्हारी सुरत सीधी ऊपर जायेगी। मैंने इशकमजाजी की हुई है बारह साल जो कुछ कमाया दातादयाल जी महाराज के चरणों में दे दिया सेवा अलग रही अब जब मैं अभ्यास में बैठता हूँ मेरी सुरत सीधी ऊपर जाती है। अब त्रिकुटि, सुन्न महासुन्न, भँवरगुफा का विचार जाता रहा। ये तो मन के खेल थे सीधा प्रकाश और शब्द को पकड़ता है।

तुम मातायें आती हो घर में शान्ति से रहो। दूसरे तुम नौ जवान हो हमारी अशान्ति का मूल कारण हमारे विषय विकार का का जीवन है। चालीस बूँद खून से एक बूँद ओजिस की बनती है और चालीस बूँद ओजस से एक बूँद वीर्य की बनती है। जो आदमी सारी आयु विषय विकार में फँसा रहता है उसमें अशान्ति का आना आवश्यक है। मैंने १९०५ में नाम लिया १९१६ तक सिवाये रोने पीटने के कुछ न बना। न प्रकाश आया न शब्द। मैं अपने आपको ही सतसंग करा रहा हूं। क्यों? तेरह साल की आयु में विवाह हुआ सोलह साल की आयु में गृहस्थ में फँस गया। तुम नौजवान लड़के लड़कियां मेरी बात को ध्यान से सुनो या न सुनो। अगर मेरी बातें बुरी लगती हैं तो सत्संग में मत आया करो। अपने ब्रह्मचर्य का पालन करो, मैं बारह साल बसरे बगदाद में रहा उस समय की मेरी फोटो देखो, फिर घर वापिस आया गृहस्थ में फँसा अशान्ति आगई, समझ में नहीं आता था कि मुझे क्या हुआ। एक दिन अन्तर से आवाज आई। जहां काम तहाँ नाम नहिं।

होश आई अपने आपको कंट्रोल किया। हमारी अशान्ति का मूल कारण हमारा विषय विकार का जीवन है यह बातें हमको पहले किसी ने बताई नहीं। न माँ बाप ने न गुरु ने और न समाज

ने। दूसरे तुम्हारी जितनी आमदनी है उसके अनुसार खर्च करो। हमारे दुखों का अधिक कारण हमारा आमदनी से अधिक खर्च करना है दान उतना दो जितना खुशी से दे सको। अपने बच्चों का पेट काट कर मानवता मन्दिर, किसी डेरे या गुरु को दान मत दो यह महा पाप है। एक और बात जो कि मैं वहाँ पर कहके आया हूँ कि दान हर दिन किया करो, अभ्यास भी प्रतिदिन किया करो अभ्यास में कभी नाम न आये। हमारे पूर्वज क्या किया करते थे। जब खाना खाते थे तो सबसे पहले गाय, कुत्ते और कवे का ग्रास रख लिया करते थे। ब्राह्मण को हर दिन दिया करते थे। एक दो पैसे हर दिन निकाले या मन में निश्चय करले कि मैंने प्रतिदिन यह दिया अगर तुम अलग नहीं रख सकते हो। ऐसा करने से तुम्हारे मन में दान करने देने की आदत पड़ जायेगी। एक आदमी आज एक लाख दान करता है, लेकिन चार साल कुछ नहीं करता तो उसको इतना लाभ नहीं होगा जितना कि हर दिन दान करने से होता है। हर दिन दान किया करो, हर दिन अभ्यास किया करो प्रति दिन अच्छे विचार लिया करो ताकि तुम्हारा जीवन बन जाये। दान देने वाले का दिल उदार हो जाता है। जब मैं बाहर दौरे पर जाता हूँ तो कई आदमी रुपयों की थैलियां मुझे देते हैं कोई चार पैसे हर दिन निकालता है कोई दो पैसे। किसी थैली में पंदरह रुपये निकलते हैं किसी में दस रुपये। अगर आपके पास दान देने को धन नहीं है, आप गरीव हो यो तुम स्त्रियाँ जब खाना बनाती हैं तो एक मुट्ठी आटा या चावल निकाल कर अलग रख लिया करो। जव एक सप्ताह होजाये तो रोटियाँ बनाकर कोढ़ियों, कुत्तों या कौवों को खिला दो। ये बातें मैं दिल से कह रहा हुं। हैं ये मामूली परन्तु इन्हें मामूली मत समझो। ये जीवन के सिद्धान्त हैं लगातार ३६५ दिन किया करो। अगर तुम्हारी गरीबी दूर न होजाये तो जहाँ तुम मेरी फोटो पर फूल चढ़ाते हो वहाँ जो इच्छा हो करो। हमारे

पूर्वज हर दिन किया करते थे। वे मूर्ख नहीं थे उनके मस्तिष्क थे तुम हर दिन एक काम करो, हर दिन नेकी करो कितनी नेकी हो जायेगी। मैं आपको जीने का भेद बता रहा हुं। अब जो बूड़े होगये हैं वच्चे पैदा होगये हैं उन्हें अब गृहस्थ छोड़ देना चाहिये। स्त्रियाँ केवल बच्चे पैदा करने के लिए हैं भोग विलाश के लिये नहीं हैं यद्यपि मैंने भी ऐसा किया है लेकिन मेरा अनुभव मुझे बताता है कि अधिक विषय विकार का जीवन अच्छा नहीं स्वास्थ्य विगड़ जाता है।

मैंने बहुत कुछ आपको बता दिया मैं अपनी आत्मा से पूछता हुँ फकीरचन्द ! तूने यह मकड़ी का जाल वना रखा है तू किसी के लिए क्या कर सकता है? यह एक प्रश्न है। दुखीं लोग मेरे पास आते हैं कई आदमियों के पत्र आते हैं, अगर तुम्हारे विचार में शक्ति है और तुम रूप बनाकर मुझसे पर्चे हल करवा लेते हो, दवाईयाँ पूछ लेते हों। मैं तो कहीं जाता नहीं तो इससे सिद्ध हुआ कि आदमी के मन में शक्ति है तो मेरे मन में भी होनी चाहिये। मैं सच्चे दिल से चाहता हुं कि जो लोग मेरे पास आते हैं उनकी सब कामनायें पूर्ण हों और अबश्य होनी चाहिए क्योंकि तुम्हारे और मेरे विचार में शक्ति है।

मैंने सारे जीवन के अनुभव बाद 'इन्सान बनो' की आवाज १९४७ में उठाई थी और इसीलिए अपने स्थान का नाम Be man Temple रखा है।

———

हितोपदेश

पहली कथा

कुटुम्ब

ईश्वर ने कुटुम्ब रचा। जीव जन्तु बन गये। मनुष्य कुल ऊत्पन्न हुआ। और सब रहने लगे। ईश्वर देखने आया। वह लड़ रहे थे। मिल जुल कर रहने की शिक्षा देकर चला गया।

यह मिलने को तो मिले परन्तु लड़ाई बन्द नहीं हुई।

ईश्वर फिर आया। इनकी दशा देख कर प्रसन्न नहीं हुआ। बोला मिलजुल कर रहो।'

एक बोला 'इसे निकाल दो. शान्ति आजाये।' ईश्वर ने कहा 'किसे निकालूँ! किसे रखूँ। कुटुम्ब तो कुटुम्ब है।' कोई न समझ सका वह लौट गया।

फिर आया और यही दृश्य आंखों में आँया। फिर वही उलहना और निकालने की प्रार्थना!

ईश्वर बोला "कहां निकालूँ? यह कहां रहे? कुटुम्ब से बाहर कुटुम्ब तो नहीं रह सकता।'

फिर भी समझ नहीं आई और वह चला गया।

कुछ दिन पीछे फिर आया और वही लड़ाई झगड़ा! और वही बात!

ईश्वर बोला 'निकालने निर्वलता और साथ रहने में बल रहता है।'

किसी ने नहीं समझा और वह चला गया।

फिर आया। इस बार वहुत से मनुष्यों ने मिलकर उस एक की निन्दा की। ईश्वर बोला "तुम को समझ नहीं है। सब बुन्द मिलकर समुद्र होते हैं। एक के निकल जाने से समुद्र समुद्र न रहेगा।' यह कहकर वह फिर चला गया। किसी ने भी बात न समझी।

जब आया फिर वही ऊधम ! तब उसने सब को मिलाकर कहा 'सत्संग करो । सत् जीवन है," और चला गया, किसी ने फिर नहीं समझा ।

सातवीं बार आकर वहीं उत्पात देखा और निकालने की प्रार्थना सुनी । बोला 'शब्द का साधन करो, मेरा रूप देखो, मेरा नाम लो ।'

सब घबराये हुये थे । बात मानी । उसकी सुनी । ईश्वर का रूप देखा । और जिसकी निन्दा वह करते थे उसे ईश्वर में गुथा हुआ पाया । सोचा । "यह तो उसी में है । उसीं का है । उसी से है । उसके निकाल देने से ईश्वर का एक अङ्ग निकल जायेगा और हानि पहुँचेगीं । 'तब उनके हृदय में प्रेम उत्पन्न हुआ । एक दूसरे को प्यार करने लगे और सहज में शान्ति आगई । अब ईश्वर का कुटुम्ब सुख और आनन्द से रहने लगा और निन्दा और आपस की खटपट जाती रही ।

शब्द

१. प्रेम औषध, ईर्षा और द्वेष मन के रोग हैं ।
रोग जब हों दुख विपत, आपत क्लेश और सोग है ।। १ ।।
२. सब हैं उसके वह है सबका, उससे न्यारा कौन हैं !
भूल में कैसे पड़े ! भरमे हुये सब लोग हैं ।। २ ।।
३. फूट का फल दुख है दुख, में सत्त का जीवन नहीं ।
सङ्ग सत का फल चखो, उस ही में सुख के भोग हैं ।। ३ ।।
४. राधास्वामी ने दिखाया, प्रेम का रास्ता हमें ।
प्रेम में सुख शान्ती, आनन्द के संयोग हैं ।। ४ ।।

दूसरी कथा

जगत वाटिका

ईश्वर ने जगत को वाटिका बनाया । नाना प्रकार के वृक्ष बूटे और पौधे लगाये । घास पात काटे कटीले उगाये । वाटिका रमणीक ! देखने में

मनोरंजन और मनोहर ! उसमें जहां देखो सुन्दरताई का दृश्य आंखों को आकर्षित करता था। उसमें सब कुछ था। वाटिका सुन्दर ! शोभा धाम ! और सब विधि से पूर्ण थी। कोई उसे देख कर यह नहीं कह सकता था कि इसमें यह है और यह नही है। बहुभांति के पक्षी पखेरू वृक्षों की शाखाओं पर कुलेल किया करते थे। फूलों पर मक्खी और भँवरे मँडलाते रहते थे। जीव जन्तुओं ने उसे सुखदायक समझ कर उससे जी लगाया। उसमें पांच प्रकार के पदार्थ शरीरधारी होकर अपनी अपनी शोभा दिखाते रहते थे। यह शब्द, स्पर्श, रूप रस और गन्ध थे।

ईश्वर ने मनुष्य से कहा "जा ! इस वाटिका को देख। और उसको देखकर जीवन, बुद्ध और सुख का भोग प्राप्त कर।" मनुष्य आया। कुछ दिनों तक तो वह उसका सुख भोगता रहा। फिर संयोग वश वह उसके दोष निकालने लगा और आप ही आप दुखी होगया।

ईश्वर ने मनुष्य की दशा देखी। पूछा 'इस सुख की बाटिक में आकर तू दुखी क्यों होगया ? यहां तू दुख भोगने के लिये तो नहीं आया था ! तुझे हो क्या गया ?"

मनुष्य बोला तेरी वाटिका बहुत अच्छी है परन्तु तू ने समझ बूझ कर काम नहीं किया। मुझसे संम्मति ली होती तो मैं सुमति देकर इसे और भी अच्छा वनवाता।

ईश्वर हँसा "अब क्या हुआ है ? यदि तू इसे और अच्छा बना सकता है तो अब काम में लग जा। मैं तुझे आज्ञा डेता हुं। परन्तु यह तो बता दे कि इसमें त्रुटी क्या है ?"

मनुष्य ने कहा 'बाटिका में फूल ही फूल होने चाहिये। कांटे का नाम न रहना चाहिए।'

ईश्वर मुसकराया 'अच्छा ! कांटों को काटकर निकाल दे !"

मनुष्य ने ऐसा हो किया। कुछ दिनों तक तो वह फूलों की शोभा देख देख कर मन में फूला न समाया। फिर उससे जी भर गया। घबराया,

उकताया और दुखी हुआ ।

ईश्वर आया । उसकी दशा देखी और पूछा 'क्या है ?'

यह बोला 'वाटिका बिगड़ गई ।''

ईश्वर ने कहा ''फूल की शोभा कांटों ही से थी । तू ने कांटे काट डाले । अब एक ही पदार्थ के रहने से तेरे विचार बुद्धि में विकलता आगई । बाटिका की शोभा यही है कि उसमें सब कुछ हो तब तो वह पूर्ण है नहीं तो अधूरी और अपूर्ण ! यह वाटिका तो नहीं रही । अब फुलवारी रह गई ।'

मनुष्य ने कहा 'फूल इतने लाभदायक नहीं होते । केबल सुगन्ध देते है । मैं फूल के बृक्ष लगाना चाहता हूँ ।'

ईश्दर हँसा 'फिर तुझे रोकता कौन है ! वह भी कर देख !'

मनुष्य ने वैसा ही किया । फल खाये । घूमा फिरा । जिन वृक्षों में फल नहीं लगते थे सब काट गिराये । अन्त में उससे भी उकता गया और दुखी हुआ ।

ईश्वर फिर आया । पूछा 'अब तो तू सुखी है ?'

यह बोला 'नहीं !'

ईश्वर ने फिर प्रश्न किया 'क्यों ?'

यह कहने लगा 'फल ही फल रह गये हैं ।'

ईश्वर ने कहा 'तू ने भूल की । यह बाटिका नहीं रही । फुलवारी हो गई । फुलवारी भी नहीं ! पतबारी भी नहीं ! कटवारी भी नहीं ! अधूरी वस्तु सुखदाई नहीं होती ।'

यह कहकर ईश्वर चला गया ।

मनुष्य ने काट छाँट से बहुत काम किया परन्तु उसे सुख नहीं प्राप्त हुआ । तब महा दुखी और व्याकुल हुआ ।

ईश्वर ने आकर उसकी दशा देखी । पूछा 'क्यों ! अब तो तू सुखी है ?'

इसने उत्तर दिया 'मैं भ्रम में प्रड़ गया । जो कुछ तू ने किया था बही ठीक था ।'

ईश्वर ने प्रसन्न होकर कहा 'मुझे देख ।'

उसने उसे देखा। ईश्वर वाटिका स्वरूप प्रतीत हुआ और उसमें सब कुछ था। चकित हुआ। फिर ईश्वर ने कहा 'अपने को देख।' उसने दृष्टि फेर कर अपने अन्तर में देखा। वह भी आप वाटिका के रूप का निकला। तब तो वह और भी चकित हुआ। ईश्वर बोला 'यह वाटिका तेरा ही रूप अथवा तेरे रूप की छाया है। इसका तिरस्कार न कर। न इसके किसी पदार्थ से घृणाकर। जैसा हैं वैसा रह और तू सुखी रहेगा। यदि वहां एक की आवश्यकता है तो सब की आवश्यकता है।'

तब मनुष्य को पूर्ण सुख प्राप्त हुआ।

शब्द

१–प्यार कर सब से, भरम कीं, द्वेष दृष्टी त्याग कर।
रूप है यह जगत तेरा, इसी से अनुराग कर ।। १ ।।
तू यहाँ है तू वहां है, लोक में, परलोक में।
किस जगह जायगा, इस रचना को कह दे भाग कर ।।२।।

३–'नेति' क्यों कहता है ? 'एती' भाव को चित दे सदा।
'नेति' है वैराग 'एती,' भाव से अनुराग कर ।। ३ ।।

४–'नेति' 'एती' दोनी कल्पित, इनका तो उत्थान है।
त्यागना हो त्याग दोनों, नींद भव से जाग कर ।। ४ ।।

५–राधास्वामी सन्त सतगुरु, के वचन सुन प्रेम से।
पद कमल में सर झुकां, भक्ती अटल वर मांगले ।। ५ ।।

—०—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

'नाम'

ले०—दुर्गादास 'चमन'

नाम तुम्हारे पास है गुरु से पूछो जाय।
गुरु से पूछो जाय नाम की अकथ कहानी।
सत्संग ही है सार यही है एक निशानी।
नाम नाम में भेद सार कोई बिरला जाने।
नाम सत्त से पार कहो कैसे पहचाने।
मन की शक्ति अधिक, नहीं है कोई ठिकाना।
मन की सीमा पार करे कोइ सन्त सुजाना।

प्रेम भाव सतगुरु दया से यह न्यामत पाए।
नाम तुम्हारे पास हैं, गुरु से पूछो जाय।

सफेद दाग से दुखी क्यों

प्रिय सज्जनो! औरों की भांति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन लेप से सफेदी के दाग जड़ से आराम ने हो तो मूल्य वापिस। मू० १२) खाने की दवा मू० १२)

सफेद बाल काला

खिजाव से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल के सेवन से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तेल दिमागी ताकत और आँखों को रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापिस की शर्त लिखा लें। मूल्य १० रुपये फुल कोर्स २७ रुपये।

ऊमा आयुर्वेद भवन
पो०—लाल विद्या (गया)

सतगुरु प्रेम

ले० — दुर्गादास 'चमन'

सतगुरु दोनों हाथ से, देते नाम का दान।
देते नाम का दान, अरे कोई ग्राहक आवे।
सच्चा बन जो आए, उसे झट कंठ लगावे।
दुनिया भूली नाम, पड़ी इस मन के अन्दर।
कोई मसजिद जाए कोई जा ढूँडे मन्दर।
कोई बेटा चाहे कोई धन खोजे भारी।
कोई चाहे मान बना है गद्दी धारी।
मन के है सब रूप जहां तक दृष्टि पाई।
बिना दया सतपुरुष नहीं कोई छूटा भाई।
प्रेम दया का सार, अरे इसको अपनाओ।
करो नाम से प्रेम, यह मन फिर दूर भगाओ।
प्रेम करो सतपुरुष से, बन जाएगा काम।
सतगुरु दोनों हाथ से देते नाम का दान॥

धन्यवाद

'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ २५) श्री पिरानदास मंगलानी जबलपुर, २१) श्रीमती सत्यवती वर्मा गाजियाबाद, १०) श्री पुस्करसिंह भंडारी, १०) श्री ओंकारसिंहजी मथुरा एवं ११) परमसन्त दयाल लायब्रेरी बुलन्दशहर से प्राप्त हुए हैं। हम सभी भाइयों के अत्यन्त आभारी हैं। एवं गुरु से उनकी समृद्धि एवं शान्ती की कामना करते हैं।

प्रकाशक

परमदयाल फ़कीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

दयाल फकीर की जीवनी	३)५०
मानव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
मानव धर्म प्रकाश भाग २ (श्री दुर्गादास कृत)	१)
आवागवन उर्फ जीवन रहस्य	१)५०
सार का सार भाग १ व २	५)
गरुड़ पुराण रहस्य	१)७५
सन्त सत्गुरु वक्त	१)५०
अगम वाणी भाग १, २, ३	३)
सतप:	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)५०
सुरत शब्द योग	१)
प्राण से परे	१)
हद्दी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)२५
मेरी धार्मिक खोज	१)२५
गुरु महिमा	१)
गुरु वन्दना	)७५
अजायब पुरुष	१)
सार तत्व सचाई और शान्ति	१)
आदि अन्त	१)२५
पांच नाम की व्याख्या	१)५०
सत ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
नाम दान	१)
उस घर की खोज	१)
अगम विकास	१)
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व२	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	२)५०
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	६)
अदभुत मोती	१)
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)७५
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२
मानवता युग धर्म	८)०५
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)७५
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
कबीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव विवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)५०
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)५०
फकीर प्रवचन	)७५
सार भेद	)२५

...d. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—
कार्यालय
मनुष्य बनो
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 780

श्री Yampally Gandaiah
V. Sangi (K)
P.O. Todikal via Pitlam
Distt. MEDAK. A.P.

प्रकाशक— प्रभुदयाल मीतल